सतपत्री

(यह सतपत्री अभिमंत्रित है , इसका सदैव आदर करें।)

सत् आश्रम

मम सात्विक मनुष्य च:

ॐ गणेशाय नमः
जय धूमावती माँ

ॐ बं बटुक भैरवाय नमः
जय पितृदेवों की

सतपत्री क्या है?

जय गुरुजी महाराज ॐ सतआश्रम जय गुरुजी

WWW.FREEDOMENLIGHTERTRUST.COM

सनातन विज्ञान से पूरी तरह परिपूर्ण है ,ब्रह्मांड की कॉस्मिक ऊर्जा , सकारात्मक फ्रीक्वेंसी(तरंगो) की समझ, उस ऊर्जा से खुद को लाभ पहुंचाने की समझ इसी सनातन की देन है। यह सतपत्री आपके जीवन का आपके भूत, वर्तमान,भविष्य का एक लेखा-जोखा है। आपके भाग्य का,आपके कर्मों का प्रतिबिंब है। प्राचीन वैदिक शास्त्रों द्वारा ज्योतिषी के समस्त ज्ञान की समझ को एकाकार करते हुए जन्म कुंडली का निर्माण एवं उपाय ही सतपत्री में निहित है। प्रारंभ करने के पूर्व भचक्र को समझना महत्वपूर्ण है। भचक्र को राशिचक्र भी कहते है।राशि चक्र में पहला नक्षत्र है अश्विनी नक्षत्र , इसके पश्चात भरणी नक्षत्र , इसके पश्चात कृतिका नक्षत्र कुल २७ नक्षत्र है। एक राशि ढाई नक्षत्र से बनती है, उदाहरण के लिए पहले दो नक्षत्र अश्विनी और भरणी से मेष राशि का निर्माण होता है। वैदिक ज्योतिष में राशिचक्र एवं उसमें स्थित ग्रहों व नक्षत्रों की स्थिति द्वारा कुंडली का निर्माण होता है । अगर यह सटीकतम हो तो जातक की स्थिति ,परिस्थिति , नीयत ,नियति का अनुमान सटीक पता लगता है । सतपत्री के माध्यम से जातक की राशि का सटीक अनुमान लग पाता है।

ॐ गणेशाय नमः
जय धूमावती माँ
अभिमंत्रित सतस्टोन्स
ॐ बं बटुक भैरवाय नमः
जय पितृदेवों की
जय गुरुजी महाराज
ॐ सतआश्रम
जय गुरुजी

ॐ गणेशाय नमः
जय धूमावती माँ

सेवा परमो धर्मः
ॐ सतआश्रम

ॐ बं बटुक भैरवाय नमः
जय पितृदेवों की

जय गुरुजी महाराज

जय गुरुजी

भाग्य और कर्म में से क्या प्रधान होता है ?
अगर आपका भाग्य उच्च है ,और कर्म नीच का तो भी आपको गति नहीं मिलेगी और अगर आपका कर्म उच्च का है और भाग्य नीच का तो भी आपको सतमार्ग नहीं मिलेगा। यह भाग्य था एक लकड़हारे का कि उसे पूरी पृथ्वी पर अपना एक साम्राज्य स्थापित करना है और यह कर्म करवाए श्री चाणक्य ने की उसने नंद वंश के शासक धनानंद को हराकर श्री चंद्रगुप्त मौर्य की उपाधि प्राप्त की। आप निसंदेह अपने भाग्य के साथ बदलाव नहीं कर सकते, परंतु अपने कर्मों की गति बदलते हुए ,सेवा भाव रखते हुए अपने आने वाले भाग्य को संवार भी सकते हैं और सकारात्मक भी कर सकते हैं।

WWW.FREEDOMFIGHTERTRUST.COM

ॐ सतआश्रम

नाम -

जन्मतिथि -

जन्मस्थान -

जन्मसमय -

ॐ गणेशाय नमः

ॐ बं बटुक भैरवाय नमः

जय धूमावती माँ

जय पितृदेवों की

जय गुरुजी महाराज

जय गुरुजी

WWW.FREEDOMFIGHTERTRUST.COM

आपका कल्याण हो, आप सदैव प्रसन्न रहें , आपकी हर मनोकामना पूरी हो

ॐ गणेशाय नमः
जय धूमावती माँ
जय गुरुजी महाराज

ॐ बं बटुक भैरवाय नमः
जय पितृदेवों की
जय गुरुजी

भूत , वर्तमान , भविष्य

ॐ सतआश्रम

नाम -

भूत
(आपका व्यक्तित्व, आपका भूतकाल, आपकी जानकारी, आपके पूर्व जन्म के कर्म)

वर्तमान
(आज का समय, आज की गतियाँ)

भविष्य
(आने वाले निर्धारित समय के कर्म)

www.freedomfighterstrust.com

ॐ गणेशाय नमः
जय धूमावती माँ

ॐ बं बटुक भैरवाय नमः
जय पितृदेवों की

उपाय

जय गुरुजी महाराज ॐ सतआश्रम जय गुरुजी

।।।जरूरी उपाय अभिमंत्रित सतस्टोन को अपने साथ ऊपरी जेब में
या हैंडबैग पर्स इत्यादि में रखने के बाद ही करें।।।

नियमित चलने वाले उपाय | जरूरी उपाय दिनांक और माह के | विशेष खबरदारियां

WWW.FREEDOMFIGHTERTRUST.COM

ॐ गणेशाय नमः

जय धूमावती माँ

विशेष उपाय (पूरे जीवन के)

ॐ बं बटुक भैरवाय नमः

जय पितृदेवों की

जय गुरुजी महाराज

ॐ सतआश्रम

जय गुरुजी

www.freedomfightertrust.com

ॐ गणेशाय नमः
जय धूमावती माँ

ॐ बं बटुक भैरवाय नमः
जय पितृदेवों की

भरतवाक्य

जय गुरुजी महाराज ॐ सतआश्रम जय गुरुजी

प्रातः काल उठते समय ॐ गणेशाय नमः, ॐ बं बटुक भैरवाय नमः, जय धूमावती मां, जय पितृ देवों की, जय गुरु जी महाराज और जय गुरु जी इनका जाप जरुर करें। यह आपके जीवन में शक्ति, सफलता एवं उन्नति का मार्ग प्रशस्त करेगा। जीवन सफल बनाने हेतु अभिवादन के समय "ॐ सताश्रम" नियमित कहें । "मम सात्विक मनुष्य च:" के जाप जरुर करें, यह आपको एवं आपके अभिमंत्रित सतस्टोन को इस ब्रह्मांड की असीम कॉस्मिक ऊर्जा से, असीम सकारात्मक ऊर्जा से ओतप्रोत करता रहेगा। मात-पिता चाहे जैसे भी हो उन्हीं का सुमिरन करें एवं ध्यान करें वह बेहद जरूरी है।

ईश्वर आपका कल्याण करे,आपके हर मनोरथ सिद्ध एवम सफल होंगे।

www.freedomfighterstrust.com